शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

राजी सेठ की कहानियों में स्त्री-विमर्श

श्रीमती अंतिमबाला जायसवाल (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

वर्तमान युग महिला सशक्तिकरण का युग है। जब से महिला सशक्तिकरण वर्ष मनाया गया है , तब से स्त्री-विमर्श विषय केन्द्र में आने लगा। यह अपनी अर्थवत्ता में बहुत ही गहन है। इसलिए सभी सुधी जन-साहित्कार व महिला लेखिकांए इस दिशा में सजग हैं। विज्ञापन दाता, समाजसेवक, कार्यकर्ता, मीडिया, फिल्म आदि हर कोई सदियों से पीछे धकेल दी गई शोषित-दमित स्त्री को केन्द्र में लाकर उस पर पुनः विचार करने को उत्सुक है। हिन्दी कहानी की यात्रा में स्त्री विमर्श अलग-अलग दौर की महिला कथाकारों द्वारा अलग-अलग दृष्टियों से देखा, जांचा-परखा गया। स्त्री-विमर्श के अंतर्गत 'स्त्री' के देवी रूप को नकारकर उसे सहज मानवी रूप में प्रतिष्ठित करने की मांग पुरूष सत्तात्मक समाज में पुरजोर ढंग से की गई , ताकि स्त्री को उसके सहज मानवीय स्वरूप में स्वीकार किया जा सके। प्रस्तुत शोध पत्र में राजी सेठ के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श की पड़ताल की गयी है

भूमिका

हिंदी कहानी यात्रा के प्रारंभिक दौर से ही महिला कथाकारों ने अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करवाई। जिसकी सशक्त उदाहरण है - बंग महिला (राजेन्द्रबाला घोष)। इनकी कहानी 'दुलाईवाली' हिन्दी की प्रांरभिक महत्वपूर्ण कहानियों में गीनी जाती है। इस कहानी का मुख्य स्वर स्त्री के अकेलेपन को मुखरित करना रहा है। 'दुलाईवाली' कहानी से प्रेरणा पाकर अनेक महिला रचनाकार साहित्य के क्षेत्र में आयीं , जिनमें शैल कुमारी देवी, यशोदा देवी, गोपाल देवी, प्रियम्वदा देवी आदि प्रमुख हैं। इन महिलाओं ने नारी मन की दुर्बलता, उनका मानसिक संधर्ष, प्रेम त्याग आदि को लेखनीबद्ध किया , किंतु वह आदर्श स्त्री की छवि ही चित्रित करती रही। भारत में स्वंतत्रता प्राप्ति के पूर्व से लेकर साठोत्तरी दौर की महिला कथाकारों के बीच एक ऐसी पीढ़ी भी आई जिसने स्त्री जीवन के संघर्षो को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रकाश में लाने का प्रयास किया। इस दौर की प्रमुख महिला लेखिकाएं हैं - उषा देवी मित्रा , रजनी पणिकर, कंचनलता, चंद्रकिरण , शिवरानी देवी आदि। इस समय की यथार्थ चेतना को इस युग की लेखिकाओं ने अपने लेखन में साकार किया। सन् 1960 के पश्चात का काल स्त्री मुक्ति विचारधारा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि रचनाकार परंपरागत मान्यताओं से दूर हटकर अपने विकास की नई भावभूमि तलाशने लगा। भारतीय स्त्री शिक्षित-अशिक्षित घरेलू-कामकाजी, शहरी एवं ग्रामीण सभी क्षेत्रों की स्त्री की मानसिकता में बदलाव के चिह्न कहीं कम और कहीं ज्यादा दिखाई देने लगे। स्वातंत्र्योत्तर भारत में विगत पचास-साठ वर्षो से सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक जीवन में

शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अभूतपूर्व बदलाव परिलक्षित हुए। संयुक्त परिवारों के विघटन के कारण भारतीय स्त्री में विवाह के प्रति भी नवीन दृष्टि उत्पन्न हुई। नैतिकता के प्रति मुक्त सोच ने स्त्री-पुरूष संबंधो की नवीन व्याख्या की। पारम्परिक जन समाज में भय , त्रास, विघटन, अनिश्चितता, वर्ग-संघर्ष की स्थितियां उत्पन्न हुई है। यातायात और रोजगार के विकास ने मानवीय जीवन को विकासशील बनाने के साथ-साथ कम संत्रस्त नहीं बनाया है। महंगाई तथा उन्नत जीवन की लालसा के कारण पति-पत्नी दोनों कामकाजी हो गये। मध्यवर्गीय नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई। अतः उसमें भी आर्थिक स्वतंत्रता की ललक उत्पन्न हो गयी। इस प्रकार समाज व परिवार की संरचना में बहुत परिवर्तन आ गए। ये सभी बातें इस युग की लेखिकाओं की रचनाओं में दृष्टिगोचर होती है।

समकालीन महिला लेखिकाओं ने अपनी पहचान तलाशती, समाज में स्थान निर्धारण के लिये संघर्ष करती 'स्त्री' पर निर्पेक्ष हो लेखनी चलाई है। इस दौर की महिला कथाकारों ने परिवर्तित परिवेश मे पति-पत्नी के बीच संबधों में टूटन , अलगाव,प्रेम और सेक्स का नवीन भाव-बोध , विवाहेत्तर सम्बन्ध, अहम के टकराव, स्वालम्बन, उपभोक्तावादी संस्कृति के जीवन में प्रवेश से आए परिवर्तनो का सामाजिक , नैतिक, मनोवैज्ञानिक पक्ष की कसौटी पर तटस्थ होकर कहानियों मे रेखांकित किया। समकालीन कथा दौर की लेखिकाओं मे मन्नू भण्डारी , चित्रा मुदगल, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, कृष्णा अग्निहोत्री, ममता कालिया, मेहरून्निसा परवेज, नासिरा शर्मा आदि महिला लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में स्त्री जीवन की पीड़ा, व्यथा तनाव, संबंधों संघर्ष व समस्याओं पर व्यापक ढंग से अपनी लेखनी चलायी है।

राजी सेठ की कहानियों में स्त्री-विमर्श

राजी सेठ ने देर से लिखना आरम्भ किया, किन्तु थोडे ही समय में उन्होंने समकालीन लेखन में महत्वपूर्ण स्थान अर्जित कर लिया। उनकी कहानियाँ घर के अनुभव वृत्त को गहरी पहचान देने वाली कहानियाँ है , जिनमें नारी की दासता की पूरी घुटन , छटपटाहट, मर्यादाओं को ललकारे जाने की कसमसाहट, आंतरिक टूटन, अस्मिता के प्रश्न बार-बार सामने आते हैं। भले ही इन कहानियों का अनुभव वृत्त घर-परिवार की चारदीवारी का ही हो , किंतु फिर भी पूर्णतः नया है। डॉ.पुष्पलालसिंह के अनुसार "घर के अनुभव वृत्त में घुमड़ता नारी-मन अपने व्यक्ति-स्वातंत्र्य के लिए जिस रूप में चेष्टारत है , उससे वह उन सामाजिक विसंगतियों को हमारे सामने लाता है , जो वर्तमान स्थितियों के लिए उत्तरदायी है। अपने इस रूप में कहानियाँ सामाजिक चिंता से सरोकार रखती हैं।"1

आधुनिक स्त्री की तरह राजी अपने लेखन में स्त्री होने से इन्कार नहीं करती है , बल्कि अपने स्वाभाविक रूप में उसे आने देती है। उन्होंने नारी जीवन के ऐसे गुप्त और अमूर्त केन्द्रों का चित्रण किया है , जिसे एक स्त्री ही अधिक सच्चाई से चित्रित कर सकती है। उन्हें पुरूष की उपस्थिति नकारात्मक नही लगती, वे स्त्री जीवन के विविध पक्षों के साथ-साथ उसकी खोट भी पहचानने की कोशिश करती है।

राजी जी का श्रेष्ठ रूप स्त्री के संदर्भ में परंपरा प्राप्त नैतिक दार्शनिक आयामों का अन्वेषण और उन पर पुनर्विचार की अपेक्षा में निहित है। 'सदियों से' दाम्पत्य की धवलता को सिद्ध करने के लिए सूली पर टंगी स्त्री की पीड़ा का साक्ष्य

है। कभी न किए गए अप राधों की कीच में लिसड़ना ही क्या स्त्री की नियति है ? एक ओर प्रेम की खींच और दूसरी ओर पति की परंपरित अधिकारात्मक पुकार। वह सोचती है कि क्या स्त्री होने की यही परिणति है ? इस प्रकार कहानी का आधार स्त्री की आधिकार चेतना को प्रस्तुत करता है।

'ढलान पर ' कहानी मे नायिका बार-बार इन प्रश्नांे से जुझती है क्या समाज आधुनिकता के नाम पर जारी विघटनों और विद्रूपताओं के सहारे जिंदा रह सकेगा ? एक अन्य कहानी 'अनावृत कौन' में नायिका प्रश्न पूछती नजर आती है कि आधुनिकता के नाम पर जो कुछ भी परोसा जा रहा है , प्रचारित किया जा रहा है , हमारे लिए सहज स्वीकार्य है, अनुसरणीय है ? सवाल संस्कार के टूटने का नहीं सवाल आधुनिक भोगवाद की सड़ी-गली वासनानुकूल असांस्कृतिक व्यवस्था को लेकर है। स्त्री न सिर्फ परिवार की प्रचलित अवधारणा और मर्यादा की रक्षा करती है , बल्कि समझोते की सीढियां भी चढ़ती है। एक विवाहित स्त्री, पति के कैबरे देखने के प्रस्ताव में सारे संसार की स्त्रियों को नंगा होते हुए देखती है। कैबरे जैसे नाच में कला कहाँ है ? परंतु नायिका को लगता है कि "केवल मैं ही नहीं... आसपास की ...संसार की सभी स्त्रियाँ अनावृत होती जा रही हैं...एक-एक करके उनके कपड़े झरते जा रहे हैं और...और तुम सब उन्हें देख रहे हो। आँखें गड़ाए....वहाशियों की तरह...। कितना घृणित लगाता है। मुझे...यह सब। शेमफूल! डिस्गस्टिंग!"2

अतः कहानी में दृष्टि और मूल्यों का अंतर , पुरातनता और तथाकथित आधुनिकता का अंतर है, जिसमें स्त्री के व्यक्तित्व स्वातंत्र्य के अनेक प्रश्न कहानी की नायिका के अन्तःसंघर्ष द्वारा व्यंजित है। स्वतंत्रता के बाद की बदली हुई सामाजिक,आर्थिक स्थितियों में महिलाओं की शिक्षा और रोजगार के अवसरों में काफी वृद्धि हुई है। आर्थिक आवश्यक्ताओं और बढ़ती महंगाई ने स्त्री का नौकरी करना परिवार के लिए आवश्यक-सा बना दिया है। आर्थिक रूप से वह आत्मनिर्भर हुई है तथापि परिवार में वह पूरी तरह बंधी हुई है। नौकरी के साथ-साथ उसे अनेक पारिवारिक दायित्व निभाने पड़ते हैं। घर मे उसे परिजनों की आकांक्षाओं को पूरा करना होता है तो बाहर पुरूषों की उदण्डता , असभ्यता और शारीरिक शोषण के मानसिक तनाव भी सहने पड़ते हैं। वहीं समाज व परिवार भी कामकाजी स्त्री के चरित्र के प्रति शंकालु रहता है। साथ ही परिजनों के साथ अधिकारों की मांग किये जाने पर मतभेद बढ़ते हैं ओर सामाजिक व मनोवैज्ञानिक समस्याएं उठ खड़ी होती हैं। राजी सेठ की कहानियाँ भी कामकाजी स्त्री के दर्द को विभिन्न कोणों से उभारती है। 'योग दीक्षा' कहानी में नौकरीपेशा लड़की का दर्द व्यांजित हुआ है , जो परिवार की आर्थिक तंगी के कारण स्वयं यंत्रणा की चक्की में पिस रही है। स्वास्थ्य की खराबी के कारण काम करने की ताकत शरीर में न होने पर भी वह काम करने को अभिशप्त है। कठिन दौड़ धूप के बावजूद यह लड़की भरपेट भोजन के लिए अपनी माँ के सामने गिड़गिड़ाती है। यहां लड़की एक विवश स्त्री है जिस पर घर की जिम्मेदारियों का बोझ ऐसे समय आ पड़ता है जब उसके स्वयं शादी कर घर बसाने के दिन थे। वह सन्न रह जाती है यह सुनकर जब उसकी माँ उससे कहती है "अब दीपी सुन्नी के लिए दो-दो चार-चार चींजे बनाने कि फिकर...कर। वह सन्न रह गई। और वह ? और वह ? और वह स्वंय ?

क्या माँ को उसका कमाना इतना रास आ गया है।" 3

वर्तमान युग में पिता के परिवार को संरक्षण देना आधुनिक शिक्षित समाज का एक प्रवृत्तिमूलक पहलू बनता जा रहा है। 'मैं तो जन्मा ही' कहानी की नायिका पैतृक दायित्वों के कारण अपने प्रेमी से दूर होती जा रही है। इस प्रकार हताशा में वह पिता की पूरी दासता ही स्वीकार कर लेती है। " महिने के महिने पैसों की पोटली पिता के पायताने रख देती है। यह सतत चल रही सुविधापरस्ती।" 4

इस प्रकार राजी जी की कहानियों में कामकाजी स्त्री का घर और बाहर के जीवन का यह तनाव विभिन्न कोणों और बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित हुआ है।

स्त्री की देह को उपयोग की वस्तु के रूप में देखा जाता है और उपयोगिता के निकष पर परखा जाता है। स्त्री की इस स्थिति पर विचार करते हुए डॉ..पुष्पपाल सिंह लिखते हैं, "भारतीय नारी की स्थिति व परिस्थिति पर ऐतेहासिक दृष्टि डालने के उपरांत कुछ तथ्य सामने आते हैं, जिनमें से मूल तथ्य यह है कि नारी को यहां बहुत कुछ केवल इसलिए भोगना पड़ता-सहना पड़ता है, क्योंकि उसके पास एक देह है। धरती की प्रतिक है और कुल मिलाकर उत्पत्ति का मूलाधार है।"5

आज के युग में व्यवसायिक दृष्टिकोण के कारण स्त्री की देह को व्यवसाय का माध्यम बना लिया गया है। स्त्री की देह को कभी सिनेमा के नाम पर प्रदर्शित किया जाता है तो कभी पोस्टरों-विज्ञापनों पर अनावृत किया जाता है। 'इन दिनो' कहानी में भी अखबार के मुख पृष्ठ पर मृत नग्न स्त्री का चित्र छापा जाता है। यह अखबार द्वार-द्वार बटता है। नारी देह सुलभ न हो तो उसे शक्ति या बल से प्राप्त कर लिया जाता है। अतः आज के उपभोक्तावादी युग में स्त्री की स्थिति में सुधार की जगह विकराल रूप दिखाई देने लगा है। राजी जी इस उपभोक्तावादी संस्कृती को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रकट करती हैं। राजी सेठ की कहानियां सड़ी-गली परंपराओ व रूढ़ियों के विरोध में एक सकारात्मक दृष्टि लिये हुए है। उनकी कहानियों के विषय भले ही परंपरित हों परंतु प्राणहीन परंपराओ व रूढियो के प्रति सहज अस्वीकार आधुनिक जीवन पद्धति के अनुरूप हुआ है। यदि पुरानी परम्पराओं से अहित होता है तो ऐसी परंपराओ को अस्वीकार करना ही उचित है। विवाह संस्था में ऊब, निराशा, अविश्वास, विरोध आदि की स्थिति बनती है तो यह आवश्यक नहीं है कि इस प्रकार के संबंधों को ढोया जाये। राजी सेठ की कहानियों की स्त्री अपने दाम्पत्य संबंधों को निभाने का भरकस प्रयास करती है किन्तु जब पति की यंत्रणा, उत्पीड़न सहते-सहते थक जाती है तो वह इन संबंधों का त्याग कर अपने स्वतंत्र अस्तित्व का निर्माण करती है। यही भाव 'ढलान पर', 'उसी जंगल में', 'अकारण तो नही', 'अनावृत कौन', 'अंधे मोड़ से आगे' आदि कहानियों में प्रकट होता है। 'अकारण तो नही' कहानी की दीपाली पति में दोष के कारण मां नही बन सकती। इसका सारा दोष दीपाली पर मढ़ दिया जाता है। पति की आत्मछवि की रक्षा के लिए दीपाली बांझ की पदवी सहर्ष स्वीकार लेती है , किंतु जब परंपरित सास दीपाली को मायके भेजने और बेटे के दूसरे विवाह की योजना बनाती है , तो दीपाली विद्रोही हो जाती है। वह सुशिक्षिता है अपना भला-बुरा समझती है- अतः सर्तक हो उठती है। " यानी मै कोई स्त्री नहीं नांद हूं जिसमें तुम्हारी पुश्तों का चारा धरा रहे। एक निर्जीव जैसी वस्तु , जो भेजी

और लायी जाती रहे, जिस हिसाब से जिस किसी को उसकी ज़रूरत हो।" 6

अतः आज की स्त्री पत्नी के रूप में अपने आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए पंरपरागत रूप से मान्यताओं का विरोध करने लगी है। प्रेम और विवाह संबंधीं परिवर्तित दृष्टिकोण को कथाकार राजी सेठ ने कटु यथार्थ के रूप में चित्रित किया है। इनकी कहानियों में ऐसे स्त्री पात्रों का चित्रण हुआ है जो केवल आधुनिक फैशन व धुन के वशीभूत होकर परंपराए तोड़ने के पक्ष में है। मेरे लिए नहीं, कहानी की नायिका को पुरूष व उसका प्रेम तो चाहिए , परंतु घर नहीं , क्योंकि उसका मानना है कि घर की चौखट में बंधते ही स्त्री पर सारे कर्तव्य लाद दिये जाते हैं और उसके अधिकार छिन जाते हैं। 'किसके पक्ष में' की बेला दबंग प्रकृति की आधुनिक नारी है और उसे पति का पंरपरावादी विनम्र स्वभाव अरूचिकर लगता है । अतः वह न केवल पति को छोड़ती है , अपितु घर समाज व पुत्री तक की परवाह नही करती। इस प्रकार राजी जी जहां स्वतंत्रता के नाम पर तोड़ी जा रही परंपराओं को उचित नहीं मानती , वहीं 'मैं तो जन्मा ही ' कहानी में लेखिका ने चिक्की के व्यवहार को अत्यंत सजग दृष्टि से देखा है। उन्होंने प्रेम और विवाह में अपनी पहल करने वाली लड़की के प्रयत्नों को, जिन्हें अब तक अश्लील और हास्यापद समझते आये हैं, एक बिल्कुल नई दृष्टि से दिखाया है। कहानी हमें यह महसूस कराती है कि चिक्की जैसी लड़कियों को समझने और सराहने के लिए हमें अपनी सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि को बदलना पडेगा। यहां स्त्री के संघर्ष को सजग स्त्री दृष्टि से देखा गया है।

समकालीन कहानियों में स्त्री-पुरूष संबंधों को लेकर एक नया नैतिकता-बोध विकसित हुआ और इन संबंधों को लेकर दृष्टि पूरी तरह परिवर्तित है। यह परिवर्तित दृष्टि राजी सेठ की कहानियों में भी रेखांकित हुयी है। 'तीसरी हथेली' कहानी की नायिका जब घर के नारकीय वातावरण से ऊब जाती है, तो बाहर प्रेम खोजती है। वह एक विवाहित पुरूष से प्रेम संबंध स्थापित करती है , क्योंकि प्रेमी के साथ होने से उसके मन का क्लाइमेट बदल जाता है। 'ढलान पर' कहानी की नायिका चारू पति की उपेक्षा से तंग आकर नैली की ओर उन्मुख होती है। 'अस्तित्व से बड़ा ' व 'सदियों से' कहानियों की नायिकाएं विवाहोपरांत भी अपने पूर्व प्रेमी की उपस्थिति अनुभव करती हैं। अतः यहां स्त्री विवाह और प्रेम की परंपरागत सोच और मान्यता में ढलकर अपने व्यक्तित्व को कुंठित नहीं कर पाती है।

इस प्रकार राजी सेठ ने स्त्री से संबंधित विषयों को अलग-अलग सदर्भो में उठाया है। एक स्त्री ही स्त्री की भावनाओं को अंदर से अनुभव कर सकती है। इस कार्य को लेखिका ने कुशलता से किया है। जहां-जहां स्त्री पर अमानवीय अत्याचार हुए, उनकी स्त्री पलायन करती हैं। आक्रामक होना, विद्रोह करना व अपना अधिकार मांगने की प्रवृत्ति उनके पात्रों में दिखाई नहीं देती। 'किसके पक्ष में' व 'मेरे लिए नही' कहानियों में 'स्त्री' का विद्रोह भी विद्रोह न होकर स्वतंत्रता के नाम पर स्वच्छंदता ही कही जा सकती है। उनके स्त्री पात्र गंभीर हैं अधिक नहीं बोलते। वे विद्रोह करते हुए संपूर्ण व्यवस्था को नष्ट करते हुए दिखाई नहीं देते। क्योंकि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को अचानक तोड़ देना भी स्वस्थ दृष्टिकोण नहीं माना जाता रहा है। यही कारण है कि उनकी कहानियां शोर नहीं करती। इस संबंध में डॉ.कश्मीरी लाल लिखते हैं कि "राजी सेठ का लेखन नारी की वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के

प्रति सचेत है , जागरूक है। परंतु विद्रोहात्मक तीक्ष्णता व संघर्ष अपेक्षाकृत अभी शेष है। समझा जा सकता है कि मूक विद्रोह की यह पद्धति लेखिका ने सायास अपनायी है , क्योंकि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था की तनी हुई रस्सी को अचानक तोड़ देना भी स्वस्थ दृष्टिकोण नहीं माना जा सकता है।" 7

निष्कर्ष

अतः राजी सेठ के स्त्री पात्र विद्रोह न करते हुए अपने स्त्रीत्व की रक्षा करते हुए और वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को नकारते हुए दिखाई देते है। इस दृष्टि से राजी सेठ अपनी समकालीन महिला रचनाकारों से सर्वथा भिन्न हैं। राजी सेठ का उनकी समकालीन महिला रचनाकारों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करते हुए रमेश दवे लिखते हैं, "राजी सेठ को इसलिए उनकी सह-रचनाकारों से साथ रखकर नहीं देखा जा सकता क्योंकि न तो वे कृष्णा सोबती की तरह का कोई तेज़ बहाव पैदा करती हैं न मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा आदि की तरह स्त्री अस्मिता की स्थापना में पुरूष दंभ का कोई ऐसा प्रतिरोध जिसमें स्त्री व पुरूष केवल सामाजिकता में ही समान न हो , बल्कि दंभ में समान हो, साहस में भी समान हो और उन तमाम मनोरोगों में समान हो, जो अभी तक पुरूष एकांगी बपौती रहे है , लेकिन इसके बावजूद पुरूष प्रभुता को अपने शांत-शील से वे सतत कोमलता में बदलने का यत्न करती रहती हैं। इसलिए राजी सेठ का कथा-शिल्प शिल हैं , संवेदन और रागवस्तु की स्वाभाविकता का शिल्प हैं।" 8

अतः स्त्री विमर्श की तथाकाथित चिल्लाहट के बीच राजी सेठ की कहानियां शान्ति के साथ , खामोशी, गहराई और गंभीरता के साथ स्त्री मन के आयामों को खोजती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 डॉ. पुष्पपाल सिंह , समकालीन कहानी:रचना मुद्रा , पृष्ठ 166

2 राजी सेठ, तीसरी हथेली, पृष्ठ 29

3 राजी सेठ, तीसरी हथेली, पृष्ठ 80

4 राजी सेठ, यह कहानी नहीं, पृष्ठ 55

5 डॉ. पुष्पलालसिंह समकालीन युगबोध,पृष्ठ 69

6 राजी सेठ, यह कहानी नहीं, पृष्ठ 74

7 डॉ. कश्मीरी लाल, महिला कथाकार -समाजशास्त्रीय एवं भाषिक संकल्पना , पृष्ठ 108

8 रमेश दवे, राजी सेठ - संवेदना का कथादर्शन, पृष्ठ 5